**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# ब्रिटेन की हिन्दी कहानियों में अभिव्यक्त वृद्ध जीवन : विविध सन्दर्भ

**संजीव कुमार दुबे,** Ph.D., शोध निर्देशक, हिन्दी अध्ययन केंद्र
**सुमित कुमार,** शोधार्थी, हिन्दी अध्ययन केंद्र
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर, गुजरात, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

**Authors**
संजीव कुमार दुबे, Ph.D.
सुमित कुमार

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 07/10/2023
Revised on : -----
Accepted on : 16/10/2023
Plagiarism : 01% on 07/10/2023

## शोध सार

*ब्रिटेन के हिन्दी लेखकों (डायस्पोरा लेखकों) द्वारा कहानियों में अभिव्यक्त वृद्ध जीवन कई मायनों में उल्लेखनीय है। यह सच है कि चाहे महिला हो या पुरुष, भारत में हो या प्रवास में या फ़िर विदेशी, वृद्धों की स्थिति अत्यंत चिंतनीय हैं। इन कहानियों के द्वारा भारत के साथ–साथ हमें विशेषकर विदेशों में रहने वाले वृद्धों की स्थिति का भी पता चलता है। प्रवास में लेखन करने के कारण लेखकों में एक तुलनात्मक दृष्टि भी देखने को मिलती है। अतः इस आलेख में कहानियों में माध्यम से भारत के वृद्धों, प्रवास में रह रहे भारतीय परिवार के वृद्धों, ब्रिटेन के परिवारों के वृद्धों (अंग्रेज़ों), वृद्ध आश्रम में रह रहे वृद्धों की स्थितियों के साथ–साथ परिवार के सदस्यों द्वारा वृद्धों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार एवं वृद्ध जीवन से जुड़ी समस्याओं आदि कई मुद्दों को विभिन्न दृष्टिकोणों से, भारतीय और विदेशी सन्दर्भों में संयुक्त रूप से जानने–समझने की कोशिश की जाएगी।*

## मुख्य शब्द

*वृद्धावस्था, अकेलापन, पारिवारिक अवहेलना, प्रेम और विवाह, वृद्ध आश्रम.*

## प्रस्तावना

*वृद्धावस्था अत्यंत ही कष्टकारी होती है, क्योंकि मनुष्य का शरीर इस अवस्था तक आते–आते दुर्बल होने लगता है। यह दुर्बलता दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है और उन्हें परनिर्भर बना देती है। वृद्धावस्था और बचपन की अवस्था में कई समानताएँ होती हैं। दोनों ही अवस्था में मनुष्य को विशेषकर देखभाल की ज़रूरत पड़ती है। बाल्यावस्था की देखभाल में माता–पिता और परिवार के सदस्यों द्वारा विशेष भावनात्मक लगाव दिखता है, जिसमें बच्चे की परवरिश अच्छी से अच्छी करने की कोशिश*

*होती है, वहीं वृद्धावस्था में इस तरह के भावनात्मक लगाव का अभाव दिखता है। ज्यादातर मामलों में परिवार के सदस्यों द्वारा वृद्धों की अनदेखी और दुर्व्यवहार से उनकी दशा और भी दयनीय हो जाती है। वृद्धावस्था में शारीरिक कष्ट और कई तरह की बीमारियों के घेरने से ज़्यादा कष्टकारी उनके लिए मानसिक उत्पीड़न होता है। इसके लिए ज़िम्मेदार कई बार परिवार के सदस्य और कई बार वृद्ध खुद भी होते हैं, क्योंकि परिवार के बुज़ुर्ग होने के नाते अपने निर्णय को आदेश के तौर पर लेते हैं और उसे परिवार के अन्य सदस्यों पर थोपने की कोशिश करते हैं, फलतः टकराहट की स्थिति उत्पन्न होती है। इन बातों को हम अपने समाज में आसपास के वातावरण में भी महसूस कर सकते हैं।*

भारत में "2011 की जनगणना के अनुसार देश में वृद्ध लोगों की आबादी दस करोड़ के करीब है। जनगणना के आँकड़ों का यह भी संकेत है कि 2026 तक बुजुर्गों की संख्या 17 करोड़ के आसपास हो जाएगी।"[1] लेखक श्यामजी सहाय वृद्धों से जुड़े आँकड़ों को प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं, "वर्तमान में विश्व में वरिष्ठ नागरिकों, 60 वर्ष या अधिक की आयु, की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या भारत की है। इनकी संख्या तेजी से बढ़ रही है। हमारे देश में सामान्य आबादी 55 प्रतिशत बढ़ेगी जब कि 60+ एवं 80+ की आबादी क्रमशः 326 प्रतिशत और 7.00 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी। (संयुक्त राष्ट्र संघ जनसंख्या कोष की एक रिपोर्ट के अनुसार) बुजुर्गों की अधिकांश आबादी देहाती क्षेत्रों में रहती है। इनमें लगभग 30 प्रतिशत ग़रीबी रेखा से नीचे के हैं। विधवाओं की संख्या अधिक है। इनमें अधिकांश वंचित एवं सीमान्त समूह के हैं। ये प्रताड़ित, गृह विहीन, परित्यक्त, अकेले, बीमार एवं परिवार से उपेक्षित हैं। समाज की अवहेलना एवं सरकारी उदासीनता के शिकार। इनमें अच्छी संख्या में दलित, महादलित, अनु. जाति /जनजाति, शरणार्थी, माईग्रेंट्स, विस्थापित, एच. आई. वी/एड्स प्रभावित बुजुर्ग भी हैं। इनकी अपनी अलग समस्याएँ हैं।"[2] इन आँकड़ों से वृद्धों की आबादी के साथ–साथ उनसे जुड़ी विकराल समस्याओं का भी आंकलन किया जा सकता है।

ब्रिटेन के हिन्दी लेखकों (डायस्पोरा लेखकों) द्वारा कहानियों में अभिव्यक्त वृद्ध जीवन कई मायनों में उल्लेखनीय है। यह सच है कि चाहे महिला हो या पुरुष, भारत में हो या प्रवास में या फ़िर विदेशी, वृद्धों की स्थिति अत्यंत चिंतनीय हैं। इन कहानियों के द्वारा भारत के साथ–साथ हमें विशेषकर विदेशों में रहने वाले वृद्धों की स्थिति का भी पता चलता है। प्रवास में लेखन करने के कारण लेखकों में एक तुलनात्मक दृष्टि भी देखने को मिलती है, जैसे– वृद्धों के अकेलेपन का कारण अविवाहित होना भी दिखाया गया है, ऐसे उदाहरण भारत में न के बराबर ही देखने को मिलते हैं। अतः इस आलेख में कहानियों में माध्यम से भारत के वृद्धों, प्रवास में रह रहे भारतीय परिवार के वृद्धों, ब्रिटेन के परिवारों के वृद्धों (अंग्रेज़ों), वृद्ध आश्रम में रह रहे वृद्धों की स्थितियों के साथ–साथ परिवार के सदस्यों द्वारा वृद्धों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार एवं वृद्ध जीवन से जुड़ी अन्य समस्याओं आदि कई मुद्दों को विभिन्न दृष्टिकोणों से, भारतीय और विदेशी सन्दर्भों में संयुक्त रूप से जानने–समझने की कोशिश की जाएगी।

## अकेलापन

वृद्धावस्था अपने आप में एक रोग है, जैसे–जैसे शरीर वृद्ध होता जाता है, व्यक्ति शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्तरों पर कमज़ोर होता जाता है। ऐसी अवस्था में जीवन को लेकर एक संघर्ष बाहर तो एक संघर्ष उसके अंदर ही चलता रहता है। कई बार तो वृद्ध ईश्वर से प्रार्थना भी करते हैं कि उन्हें मुक्ति मिल जाए, परन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि थोड़े दिन और जी लें ताकि अमुक कार्य या मनसा पूरी हो जाए। ऐसी कई स्थितियों का चित्रण कहानियों में मिलता है। डायस्पोरा लेखकों द्वारा इस विषय पर लिखे गए कहानियों में भारत में रह रहे वृद्धों और प्रवास में रह रहे वृद्धों, दोनों के ही अकेलेपन से जुड़े सन्दर्भ मिलते हैं। हाँ, उनके अकेलेपन के कारण भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। ज़्यादातर कहानियों में भारतीय पात्रों से जुड़े सन्दर्भ ही मिलते हैं और उनके अकेलेपन के तार परदेश से जुड़े हैं। कुछ कहानियों में अकेलापन दूर करने के उपाय भी बताए गए हैं। वृद्धों के अकेलेपन से संबंधित जो महत्त्वपूर्ण कहानियाँ मिलती हैं, वे हैं– 'खिड़की' (तेजेन्द्र शर्मा), 'होम–लेस' (तेजेन्द्र शर्मा), 'कारावास' (उषा वर्मा), 'शेष स्मृति' (उषा वर्मा), 'वार्ड नंबर चार' (कादम्बरी मेहरा), 'परदेश में पतझड़' (अरुणा सब्बरवाल), 'नाना जी' (पुष्पा

राव), 'अकेलापन' (प्राण शर्मा)।

वृद्धावस्था में जब अकेलेपन से स्वयं की लड़ाई होती है तो व्यक्ति की संवेदना को इन शब्दों में समझा जा सकता है, "फ़िर अपने भीतर झाँकता... अकेलेपन की एक लंबी डगर... दूर दूर तक सन्नाटा... कहीं कोई आवाज़ नहीं... चींटी के साँस लेने की आवाज़ भी उसके भीतर सुनाई दे जाए... पत्नी अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गई... पुत्र लंदन के एक हिस्से में ही रहता है... पुत्री भारत में है...और वह अपना भोजन स्वयं बनाने को अभिशप्त है।"[3] उद्धरण में यह स्पष्ट है कि वृद्ध के अपने बेटे–बेटी भी हैं, लेकिन वे उनके साथ नहीं रहते। पारंपरिक तौर पर भारत में पहले संयुक्त परिवार का प्रचलन था, जहाँ लगभग तीन पीढ़ी के लोग एक साथ रहते थे जिसमें वृद्ध और बच्चों दोनों की देखभाल आराम से हो जाती थी, लेकिन इधर एकल परिवार के प्रचलन के कारण ज़्यादातर परिवारों में वृद्ध अकेले जीवन व्यतीत करने को अभिशप्त हैं। तेजेन्द्र शर्मा की ही एक अन्य कहानी है 'होम–लेस' अर्थात् बेघर। यह कहानी ब्रिटेन में बेघर लोगों को शरण देने तथा वहाँ के परिवेश और बेघर लोगों की ज़िन्दगी से जुड़े कई प्रश्न–उत्तर हमारे समक्ष रखती है, "मेरा एक बेटा और एक बेटी है। दोनों के अपने अपने परिवार हैं। मैं कुछ दिन अपने बच्चों और पोते–पोतियों के साथ रही भी। मगर मुझे लगता था कि उनके साथ रह कर मेरी अपनी ज़िन्दगी का कोई अर्थ नहीं रह गया। मैं परेशान रहने लगी, फ़िर एक दिन अचानक स्टैला से मुलाक़ात हो गई। यह मुझ से बहुत छोटी है। यह भी अकेलेपन की मारी हुई थी। बस हम दोनों को एक दूसरे का साथ पसंद आ गया और हमने फ़ैसला कर लिया कि अब हम अपने लिए ही जिएँगे।"[4] यहाँ एक बात स्पष्ट है कि परिवार में होकर भी न होने के एहसास से वृद्धा को परिवार में अकेलापन महसूस होता था, लेकिन यहाँ जब उसे दूसरी वृद्धा का साथ मिला तो उसे अच्छा लगा। कहानी 'कारावास' की वृद्धा अब 74 वर्ष की हो चुकी है। अब वह अकेले है और अकेलापन उसे खाता है। उसकी शारीरिक स्थिति भी अब अच्छी नहीं है, इसलिए उसे अब नर्सिंग होम में रखा गया है। वह अब बीते हुए स्मृतियों को याद करती है और मन के कारावास में है, "मन होता कोई उन्हें अपनी बाँहों में भर ले, सर पर अपना हाथ रख दे। माँ–बाप तो चले गए, पर इतने भाई–बहनों के रहते हुए भी यह अकेलापन झेल नहीं पा रही थीं। धीरे–धीरे वह अपने मन के कारावास में बंद हो गईं। खाना–पीना छूट रहा था। इच्छा शक्ति खत्म हो रही थी।"[5] कहानी 'शेष स्मृति' के प्रवीर की नौकरी विदेश में लग चुकी है और कहानी 'वार्ड नंबर चार' का शांतनु भी तरक्की पाकर विदेश चला गया, ऐसे में दोनों की माएँ भारत में अकेली हैं। इस स्थिति में चाहे बेटा कितना भी धन और सुविधाओं से माँ की सेवा करे, वह कम पड़ता है, "प्रवीर, ज़िंदा तो वे ही लोग रहते हैं, जिन्हें लोग याद करते हैं। जब–जब तुम लोग मुझे याद करोगे मैं जीवित हो जाऊँगी। यह एकाकीपन, यह सन्नाटा तो मेरे अंदर है। अच्छे से अच्छा होम क्या करेगा, जब काली अँधेरी रात मेरे अंदर है, यह मेरी उम्र का तकाजा है। यह एक अंतहीन जंगल है। चलते चले जाओ कोई ठिकाना नहीं, कहीं विश्राम नहीं, सोते–सोते ही उन्होंने करवट बदली।"[6] 'परदेश में पतझड़' कहानी में एक वृद्ध के अकेलेपन की वजह भाषा को दिखाया गया है। एक वृद्ध अकेले होने पर अपने परिवार के साथ विदेश में रहने जाता है, लेकिन वहाँ उसे भाषा की समस्या होती है, "विशेष रूप से भाषा हमारे लिए बहुत बड़ी बाधा है। न उसे मेरी हिन्दी आती है और न मुझे उसकी अंग्रेज़ी। भाषा का फ़ासला मुझे कर्ण के क़रीब नहीं आने देता। खुद से शर्मिन्दा होता हूँ। दोनो एक दूसरे को समझने में असमर्थ हैं। लगता है जीवन मुट्ठी से फ़िसलता जा रहा है।"[7] हालाँकि उन्हें इस समस्या से निकालने के लिए परिवार के लोग कई प्रयास भी करते हैं, "हैरो के फूड हॉल में हिन्दी भाषा भाषी हम उम्र लोगों से मिलाया, जो क़रीब रोज़ ही, सर्दी से बचने, रौनक देखने और अपना समय बिताने के लिए वहाँ बैठे रहते हैं।"[8] इस तरह यह कहानी एक सकारात्मक संदेश भी देती है कि वृद्ध अगर परिवार का हिस्सा है तो उसकी समस्या का हल निकालना भी उनका फर्ज़ है।

अकेलेपन के कई कारण तो हैं, लेकिन जो लोग अकेलेपन के शिकार हैं, वे इसे दूर करने के नए–नए उपाय भी ढूँढ़ते हैं। वृद्धों के जीवन से अकेलेपन को दूर करने के उपाय को लेकर कुछ कहानियों में प्रेरणादायी सन्दर्भ मिलते हैं। सामान्यतः ऐसा देखा जाता है कि परिवार में बुजुर्गों से लोग दूरी बनाते हैं, क्योंकि उनके पास उन्हें बोरियत महसूस होती है, लेकिन जब बुजुर्ग हुनरमंद हो तो वही सदस्य उसके पास खिंचे चले आते हैं। ऐसे ही हुनरमंद पात्र को लेकर रची गई पुष्पा राव की कहानी है 'नाना जी'। विदेश में रहे रहे परिवार में जब नाना जी

जाते हैं, तो वहाँ उनके बच्चे को हिन्दी सिखाने वाला कोई नहीं रहता है, इसकी चर्चा होते ही वे कहते हैं कि मैं सिखा दूँगा। कहानी में यह दिखाया गया है कि वे अहिन्दीभाषी क्षेत्र से हैं, फ़िर भी उन्हें हिन्दी आती है और यही उनका हुनर है, "राघवन ने कहा, हाँ भई हम बचपन से संस्कृत के साथ–साथ हिन्दी भी जानते हैं, पूरी शिक्षा हिन्दी में की।"[9] कहानी में नाना जी के दूसरे हुनर को भी दिखाया गया है, वह है गिटार बजाना, "कभी उसने पिताजी का यह रूप नहीं देखा था। पर्दा उठा, यह क्या राघवन जी का तो काया पलट जींस और दूसरे बच्चों से मिलती–जुलती टी शर्ट, बालों को पीछे खींचकर पोनी टेल। योग की वजह से उनका शरीर भी ठीक था और गिटार बजाने की शक्ति भी भरपूर, पूरे समय उन्होंने बजाकर कार्यक्रम को सफ़ल बनाया।"[10] इस तरह वे महफ़िल की शान बन जाते हैं। प्रस्तुत सन्दर्भ से यह संदेश मिलाता है कि बुजुर्गों को भी समय के साथ सामंजस्य बिठाना चाहिए और हुनरमंद होने से उन्हें सम्मान भी मिलेगा और उनके जीवन में अकेलेपन का प्रवेश नहीं होगा। अकेलापन दूर करने के उपाय बताती दूसरी कहानी प्राण शर्मा की है, जिसका शीर्षक भी 'अकेलापन' ही है। इस कहानी में पशु पालन द्वारा अकेलापन दूर करने का संदेश दिया गया है, "इस उम्र में शादी करना यारों की नज़र में उपहास बन जाता। सभी कहते ''सत्तर उम्र के बुड्ढे को शादी का शौक पैदा हो गया है। एक मित्र ने सुझाव दिया– "कुत्ते को रखिए। उससे बढ़ कर और कोई सच्चा साथी आपको नहीं मिलेगा।'' गोपाल दास को मित्र का सुझाव पसंद आया। उनको एक और हमउम्र मित्र की बात याद आई– "भई, इस उम्र में कुत्ते के साथ अपने दिन सुख–शांति से बीत रहे हैं।"[11] इस सुझाव पर वह कुत्ते को पालता है और इससे उसका अकेलापन भी दूर होता है, मानसिक शांति मिलती है और धीरे–धीरे उसके स्वास्थ्य में भी सुधार आता है। यहाँ कहानी का मूल संदेश यही है कि पशुपालन अकेलापन को दूर करने का एक अच्छा उपाय हो सकता है।

## पारिवारिक अवहेलना

प्रो. सेवाराम त्रिपाठी अपने आलेख 'वृद्धों के लिए थोड़ी सी जगह' में परिवार में वृद्धों की अवहेलना से संबंधित कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण आँकड़े प्रस्तुत करते हैं, "एस इण्डिया का सर्वे बताता है कि देश में बुजुर्गों पर अत्याचार के मामले पिछले एक साल में दो गुना से अधिक बढ़े हैं। गैर सरकारी संगठन 'हेल्प एस इण्डिया' के सर्वेक्षण बताते हैं कि पिछले वर्ष जहाँ 23 प्रतिशत बुजुर्ग अत्याचार के शिकार रहे वहीं इस साल यह आँकड़ा दो गुना से अधिक बढ़ कर 50 प्रतिशत तक पहुँच चुका है। कंपनी के अनुसार जिन 1200 बुजुर्गों पर सर्वे किया गया है, उनमें 77 फीसदी अपने परिवार के साथ रहते हैं। अत्याचार के मामले में पता चला कि 41 प्रतिशत गाली–गलौज और 33 प्रतिशत अपमानित करने की घटनाएँ शामिल हैं। 41 प्रतिशत बुजुर्गों ने बताया कि उन्होंने इसकी जानकारी किसी को नहीं दी। सर्वे बताते हैं कि पुरुष बुजर्गों की तुलना में महिला बुजुर्गों पर अत्याचार के मामले ज़्यादा हैं। सर्वेक्षण से यह बात उजागर हुई है कि बुजुगों पर सबसे अधिक जुल्म दामाद और बेटे करते हैं। (स्रोत दैनिक भास्कर 18 जून 2014)।"[12] ये आँकड़े भारत के सन्दर्भ में हैं, किन्तु कहानियों को पढ़ने से हमें परिवार में वृद्धों की अवहेलना के मामले भारतीय और पाश्चात्य दोनों ही परिवारों में देखने को मिलते हैं, जिसकी अभिव्यक्ति डायस्पोरा लेखकों ने अपनी कई कहानियों में की है। यहाँ कुछ विशेष कहानियों का ज़िक्र किया जा रहा है तथा कुछ महत्त्वपूर्ण सन्दर्भों द्वारा यह समझने की कोशिश की जाएगी कि किन परिस्थितियों में ऐसे हालात उत्पन्न हो रहे हैं, साथ ही कुछ सन्दर्भों द्वारा वृद्धों की प्रतिक्रिया की भी पड़ताल की जाएगी। परिवार में वृद्धों की अवहेलना से संबंधित मुख्य कहानियाँ हैं– 'मंथरा हत्या' (कादम्बरी मेहरा), 'समय का फेर' (नीना पॉल), 'घर से बेघर' (नीना पॉल), 'साँकल' (ज़किया ज़ुबैरी), 'वसीयत' (स्व. महावीर शर्मा), 'कायर' (शैल अग्रवाल), 'फ्री पास' (शैल अग्रवाल), 'फ़िर मिलेंगे' (जय वर्मा), 'किधर' (जय वर्मा), 'अंबा' (उषा वर्मा), 'बुढ़ापे के अमलतास' (कृष्ण कुमार), 'एक और धोती' (महेन्द्र दवेसर), 'अनकहा कुछ' (अरुणा सब्बरवाल)।

कहानी 'मंथरा हत्या' में एक बेटा अपने माँ के साथ नीच व्यवहार करता है, "जिस माँ ने कभी किसी को भूखा नहीं सोने दिया– देवर, जेठ, ननद, सास–ससुर, बच्चे सब संग ही तो रहते थे, अब उसी का सबसे लाडला बेटा उसे दो फुल्के और एक कटोरी सब्जी ना दे? क्या दुश्मनी थी?"[13] यहाँ एक माँ की पीड़ा समझी जा सकती है कि इन परिस्थतियों में उसपर क्या बीत रही होगी...। उस वृद्धा की परिवार जनों द्वारा ऐसी अनदेखी है, जो उसकी

प्राकृतिक मौत न होकर हत्या ही कही जा सकती है, "बाबूजी ने बताया कि जब से तू गई सुरेश ने एक भी दवाई नहीं दी। कहने लगे कि आशीष और विशेष के इम्तिहान हैं। उनके पास दवा देने का दिनभर वक्त नहीं। मुझे तो कुछ दिखता नहीं अच्छी तरह। माताजी ब्लड प्रेशर की दवा पचपन साल से नित्य खाती थीं। जब दिल घबराया और सिर में दर्द हुआ तो सुरेश ने आधी गोली नींद की दे दी। नींद की गोली खाकर वह दिन भर सोई रही। किसी ने परवाह नहीं की कि पानी ही पिला देते उठाकर। शरीर अंदर से सूखने लगा। मैं जब आई और उनकी यह हालत देखी तो झटपट बड़े भइया को फोन लगाया। किस्मत से उनकी वापसी तीन दिन बाद थी। सुनते ही वह दौड़े आए। बड़ी भाभी ने उठाया, पानी पिलाया। माताजी ने आँखें खोलीं। थोड़ी मुस्कराई और आशीर्वाद दिया "ठंडी रहो, सुहागवती रहो।" बस यही उनके आखिरी बोल थे।"[14] ऐसी अवहेलना और मृत्यु के क्षण में भी वह अपने बच्चों का भला ही चाहती है। कहानी 'अंबा' की पात्र 90 वर्ष की वृद्ध हो चुकी है, परिवार वाले उसकी तरफ़ बिल्कुल ध्यान नहीं देते, "तीन बेटों की माँ, तीनों बड़ी–बड़ी पोस्ट पर। लेकिन आज किसी के पास इतना सा समय नहीं कि उनका हाल–चाल भी पूछ ले।"[15] एक भरे–पूरे परिवार में उन्हें देखने वाला कोई नहीं, बल्कि उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया गया है। वृद्धों की अवहेलना के कई मामले ऐसे देखने को मिलते हैं जिसमें परिवार के लोग उन्हें ओल्ड एज होम में जाने पर विवश कर देते हैं, "इंडिया अपने पति को छोड़कर शादी के 19 वर्ष के पश्चात् माँ डेज़ी के पास रहने के लिए घर वापिस आयी थी। उसने शादी के बाद इतने वर्षों तक माँ का हाल नहीं पूछा था। सहानुभूति और सहयोग की अपेक्षा माँ से वह कैसे कर सकती थी ? फ़िर भी माँ डेज़ी अपनी केवल एक ही शर्त पर उसे घर में रखने के लिए तैयार हुई थी कि वह बुढ़ापे में माँ को नर्सिंग होम में नहीं भेजेगी। आखिरी दम तक उसकी देखभाल घर पर ही करेगी। डेज़ी नर्सिंग होम में बिल्कुल नहीं जाना चाहती थी।"[16] इस कहानी में एक बेटी अपनी माँ से वादा करके उस घर में दाखिल होती है, लेकिन उसे जल्द ही अपने स्वार्थ के लिए नर्सिंग होम भेज देती है, "मेरे सामने भी घर पर रहने की व्यावहारिक समस्या है वरना मैं माँ को कभी नर्सिंग होम में नहीं भेजती। परन्तु मैं क्या करूँ? मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं ठीक कर रही हूँ या नहीं? माँ के हित के लिए ही इतना सख्त कदम मुझे उठाना पड़ रहा है। अगर मैं नौकरी नहीं करूँ तो घर के खर्च कैसे चलाऊँगी? मेरी पार्ट–टाइम नौकरी तथा माँ की पेंशन मिलाकर ही घर का खर्च चल रहा है।"[17] यहाँ एक माँ का हृदय अपने बच्चे के प्रति इतना उदार है कि उस बुढ़ापे में भी वह उसे नहीं छोड़ती, लेकिन एक बेटी उसके साथ छल करती है। ऐसा ही एक सन्दर्भ उषा वर्मा की कहानी 'इस बार' में मिलता है, जिसमें एक बहू ऐसा ही दुर्व्यवहार अपनी सास के साथ करती है, "तब मम्मी हर आनेवाले को यही बतातीं कि अरे! हम तो चाहते थे, यहीं रहें, पर उनका मन ही यहाँ नहीं लगता। हर समय बस उनको उन्हीं की रट लगी रहती थी, जैसे हमसे, हमारे बच्चों से कोई मतलब ही नहीं। मैं सुनती और मेरा मन होता कि चिल्ला–चिल्लाकर कहूँ, यह सरासर झूठ है, मम्मी आपने दादी को चालाकी से हटा दिया है। और यह बदनामी का सेहरा भी उन्हीं के सर पर बाँध दिया है। क्या आपको ज़रा भी ख़राब नहीं लगता है, पर मैं कुछ नहीं कहती। दादी अपना कमज़ोर हाथ मेरे सर पर रख देती हैं और कहती हैं, "बेटा, तू उदास न हो, मैं सबकुछ समझती हूँ।"[18] यहाँ एक पोती अपनी दादी के साथ हो रहे दुर्व्यवहार को व्यक्त कर रही है और वृद्ध दादी सब कुछ झेलने के बाद भी अपने साथ हो रहे अत्याचार पर पर्दा डाल रही है। ज़किया ज़ुबैरी की कहानी 'साँकल' में बेटे एवं पति द्वारा किए गए दुर्व्यवहार को लेखिका ने इन शब्दों में व्यक्त किया है– "भला कौन अपनी माँ को छिनाल कह सकता है... अपने यारों के साथ घूमती हैं... क्या फ़र्क रह गया पति और बेटे में... वो भी तो अपनी कमजोरियाँ छुपाने के लिए यही इल्ज़ाम लगाता रहा है... समीर की ज़बान की कटुता की चोट जितनी गहरी लगी थी उतना तो बाजुओं पर पड़े नील के निशान का दर्द भी नहीं चुभ रहा था... अपनी जवानी का एक–एक क्षण... एक–एक क़तरा... इकलौते बेटे के नाम लिख दिया था...सोचती थी कि बाप के वक्त की भरपाई भी वह ही करेगी। आज इस उम्र में...माँ पर इतना बड़ा आरोप!"[19] कहानी के अनुसार बेटा अपनी महिला मित्र को उसी घर में रखने के लिए माँ के साथ गाली–गलौज ही नहीं करता, बल्कि उस पर हाथ भी उठाता है। बेटे के दुर्व्यवहार से तंग आकर माँ पुलिस में शिकायत करती है, लेकिन पुलिस के आने पर भी उसके हृदय में बेटे के लिए सहानुभूति होती है– "समीर के चेहरे पर बदहवासी देख कर सीमा को ठीक वही महसूस हुआ जैसे वह बचपन में अपने पिता के हाथों पिट रहा हो। उसके भीतर की माँ जैसे टूट रही थी। पुलिस देख कर शायद वह भी बुरी तरह से घबरा गई थी। उस घबराहट में भी सीमा

ने पुत्र को अकेला नहीं छोड़ा, "नहीं ऑफिसर, मेरे बेटे का इस घर पर पूरा हक़ है, मगर मैं इस आवारा लड़की को इस घर में नहीं रहने दूँगी।"[20] इतने अत्याचार सह कर भी अपने बेटे के पक्ष में खड़ा होना एक माँ ही कर सकती है।

कुछ कहानियों में वृद्धों द्वारा अपने बच्चों को सबक भी सिखाया गया है। 'घर से बेघर' में एक पुत्र अपने वृद्ध माता–पिता को घर से निकाल देता है, लेकिन आगे चलकर उसका पिता उसे सबक सिखाता है, "जी मिस्टर जरनैल सिंह लाम्बा मैम" "जरनैल".... जसमिंदर के हाथ से फोन छूट गया। उसके हाथ ही नहीं पूरा शरीर गुस्से से कांप रहा था। "पापा जी की यह हिम्मत। हमसे पूछे बिना वह हमारे घर को सेल पर कैसे लगा सकते हैं। आने दो प्रीतम को। आखिर उसके बाप ने अपनी औकात दिखा ही दी। कितनी बार प्रीतम से कहा था कि घर के कागजात पर साईन करवा लो पापा जी से। कोई मेरी सुने तब ना। अब भुगतो। यह बोर्ड हटाने के लिये मजबूरन बूढ़े को घर लाने का ढोंग करना ही पड़ेगा।"[21] यहाँ बेटे ने फ़िर चालाकी करने की कोशिश की लेकिन पिता उससे संबंध तोड़ लेता है, "प्रीतम सिंह रोते हुए आगे बढ़ा जरनैल सिंह के गले लगने के लिये परन्तु उन्होंने बेटे को हाथ के इशारे से वहीं रोक दिया और अपने कमरे में जा कर अंदर से दरवाजा बंद कर दिया।"[22] 'कहानी 'वसीयत' में एक विदेशी दम्पति अपने पिता को अकेला छोड़ देते हैं, उससे झूठ बोलते हैं कि वे उन्हें अपने पास रखेंगे। लम्बे समय तक वह अवसाद में रहता है उसे उम्मीद होती है कि बेटा उसे फोन करेगा, वह उससे बात करने के लिए तरस जाता है। इस दौरान वह एक बिल्ली पलता है, जिसके साहचर्य से उसका अकेलापन भी दूर होता है और उसकी स्थिति में सुधार आता है। कहानी के अंत में दिखाया गया है कि वह अपनी जायदाद अपने बेटे को न देकर उस बिल्ली के नाम कर देता है, "वकील साहब ने पुनः पढ़ना आरम्भ किया जिसमें यह जानकर सब बड़े ही आश्चर्यचकित हो गए कि शेष समस्त सम्पत्ति 'विल्मा' बिल्ली के नाम कर दी गई और साथ ही कहा गया था कि आर.एस.पी.सी.ए. को 'विल्मा' के शेष जीवन के पालन–पोषण का अधिकार दिया और इसी संस्था को प्रबंधक नियुक्त किया जाए। साथ ही एक सूची थी जिसमें विल्मा को वह किस प्रकार रखता था, उसकी दिनचर्या, उसके खाने का समय, वह क्या–क्या खाती है, किस ब्रांड के खाने होने चाहिए, सोने का समय, उसी बिस्तर में सोए आदि अनेक निर्देश लिखे थे। कहना है कि वह एक राजकुमारी की तरह जीवन व्यतीत करे। विल्मा के निधन पर एक स्मारक बनाया जाए। उसके बाद शेष धन को राह भटके हुए, प्रताड़ित पशुओं की दशा के सुधार पर व्यय किया जाए।"[23] कहानी में यही संदेश है कि एक पिता अपने पुत्र की तुलना में पशु को ज़्यादा बेहतर समझता है। कहानी 'समय का फेर' में एक बच्चे के शब्द अपनी माँ को सास के साथ किए गए दुर्व्यवहार का एहसास दिलाते हैं, "ममा, जब आप बड़े हो जाओगे ना दादी माँ की तरह तो मैं भी आपको बुलाने के लिए ऐसे–ऐसे घंटी बजाया करूँगा।"[24] ऐसा अक्सर कहा जाता है कि इतिहास स्वयं को दुहराता है और कर्मों के बारे में भी कहा जाता है कि 'जो जैसा करेगा वैसा भरेगा' अर्थात् लेखिका ने इस कहानी में इन प्रसंगों के चित्रण से वृद्ध वर्ग के प्रति समाज और परिवार की अनदेखी और उसके परिणाम को लेकर सचेत भी किया है।

उपर्युक्त कहानियों के विश्लेषण से वृद्ध जीवन की विसंगतियों का पता चलता है, उनके विषाद में जाने और मृत्यु को प्राप्त होने के बीच परिवार की अहम भूमिका होती है। ज़्यादातर कहानियों में परिवार जनों द्वारा की गई लापरवाही और अनदेखी से ही वृद्धों की इस त्रास्द स्थिति में पहुँचने की जानकारी मिलती है, लेकिन ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जहाँ वृद्ध के स्वयं का स्वभाव भी उन्हें इस स्थिति में लाकर खड़ा कर देता है।

## प्रेम और विवाह

वृद्ध स्त्री और वृद्ध पुरुष के बीच होने वाले प्रेम के सन्दर्भ भी कुछ कहानियों में मिलते हैं। वैसे तो प्रेम करने की कोई उम्र सीमा निर्धारित नहीं है, लेकिन सामान्यतः भारतीय समाज में वृद्धावस्था में होने वाले प्रेम के उदाहरण देखने को नहीं मिलते। इस तरह के प्रेम पनपते भी हैं तो कहीं न कहीं समाज के डर से वे सामने नहीं आते। पाश्चात्य जगत इस मामले में भारतीयों की अपेक्षा अधिक उदार है और वहाँ के उन्मुक्त जीवन शैली के कारण इस तरह के प्रेम के मामले सुनने को मिल जाते हैं। वृद्धावस्था में प्रेम को लेकर मुख्यतः दो कहानियाँ मिलती हैं, पहला, 'उडारी' और दूसरा, 'मी टू'। दोनों ही कहानियाँ अरुणा सब्बरवाल की लिखी हुई हैं। लेखिका ने इस विषय पर गहन

चिंतन–मनन किया है और कहानी के माध्यम से इस विषय पर वैचारिकी भी प्रस्तुत की है। दोनों ही कहानियों के पात्र भारतीय हैं और परिवेश ब्रिटेन है। 'मी....टू' के पुरुष और स्त्री के बीच का संवाद द्रष्टव्य है, "मैंने वक्तगुज़ारी की बात कब की है। मैं तो सम्बन्ध जोड़ने की बात कर रहा हूँ। क्यों न हम दोनों दुःख सुख के साथी बन जायें। मैं यहाँ शादी की बात.... नहीं, साथ की बात कर रहा हूँ.... इसमें हर्ज़ ही क्या है...?" वह शर्म से सर झुकाये बुदबुदाई, "मन नहीं मानता.... साठ वर्ष की उम्र में इतने बड़े पैकेज के साथ....?"[25] यहाँ स्त्री को अपने उम्र की चिंता है, ज़ाहिर है इसके पीछे समाज का भय है कि लोग क्या कहेंगे? ठीक ऐसा ही असमंजस 'उडारी' कहानी के स्त्री पात्र के मन में भी है, "इस उम्र में क्या सूझी है वह भी एक पंजाबी के साथ, गुजराती क्या सभी मर गये थे क्या...? गुजराती समाज क्या कहेगा....? नानी–दादी बन गई है.... अब तो इश्क–विश्क का नहीं भगवान का नाम लेने का समय है.... क्या उदाहरण दे रही है दामाद और बहू को....? बदनाम हो जाएगी...." यह सोचकर वह असमंजस में पड़ गई।"[26] इस मामले में नई पीढ़ी की उदार सोच को भी लेखिका ने रेखांकित किया है, "फ़िर आजकल के बच्चों की सोच संकुचित नहीं है। दरअसल अपनी व्यस्तता के कारण उनके पास समय भी नहीं है। वह अपने माँ–बाप को बस खुश देखता है। वैसे भी मेरे बच्चे भी कई बार संकेत दे चुके हैं। अभी पिछले सप्ताह की बात है, बेटी कह रही थी, "माँ मैं जानती हूँ लन्दन में सर्दियों की शामें कितनी लम्बी और अकेली होती हैं। अच्छा हो अगर आप भी कोई मित्र या साथी ढूँढ लें। मैं और भैया अपनी व्यस्तता के कारण न तो आपके साथ रह सकते हैं और न ही साथ का एहसास दे पाते हैं।"[27] कहानी के अनुसार, एक बेटी जानती है कि उसकी माँ की आयु साठ वर्ष है और पति की मृत्यु के बाद उसके जीवन में एकाकीपन है। ऐसे में नई पीढ़ी समाज के पुराने सड़े–गले रीति–रिवाज़ों को न मानकर मनुष्य की आवश्यकता को प्राथमिकता दे रही है। लेखिका ने इस विचार को अभिव्यक्त किया है, ज़ाहिर है कि ऐसी अभिव्यक्ति का आधार समाज में नई पीढ़ी की बदलती सोच को देखकर ही आई होगी। लेखिका ने पात्र के माध्यम से इस तरह के प्रेम संबंध पर भारतीय तथा पाश्चात्य समाज की तुलना भी की है, "उम्र भर तो गंभीरता और व्यस्तता का कवच चढ़ाये रखा अब तो टूटेगा ही टूटेगा। ये सब बन्दिशें भारतीय औरतों के लिये ही क्यों. ....? अंग्रेज़ों की कितनी अच्छी सोच है... 'यू ओनली लिव वन्स' जियो और जीने दो। यही है प्रदर्शन मंच, यहाँ दूसरा अवसर नहीं मिलने वाला खुशियों को ठुकराओगी तो वो दोबारा पास नहीं फटकेंगी। उसके भीतर गहरे से आवाज़ उठी... जाऊँगी. ... ज़रूर जाऊँगी। उसने मेरे भीतर की औरत को दोबारा जीवित किया है, आत्मविश्वास को उभारने का निरन्तर प्रयास किया है। पति की मृत्यु के पश्चात् समाज की लकीरों पर चलते–चलते मेरा अस्तित्व ही कहीं गुम हो गया था।"[28] इस तरह आत्ममंथन के बाद स्त्री में आत्मविश्वास जगता है और वह इस प्रेम संबंध को स्वीकार करती है और जीने का निर्णय लेती है, "वह आज़ाद पंछी की तरह उड़ने को बेताब थी। उस क्षण उसके सब मूल–बोध बिखर गये.... आस्थाएँ छिटक गईं। आन्तरिक बंधन तार–तार हो गये। उसने घर की खिड़कियाँ, ताले और गैस चौक किये. .... गहरी साँस ली.... अपना बैग उठाया.... दरवाजा खोला, पहला कदम बाहर रखा.. ठिठकी.... फ़िर मुस्कुराई... दरवाज़ा बंद कर निकल पड़ी..... आज उसके लब गुनगुना रहे थे....।"[29] ये अंतर्मन के भाव 'उडारी' कहानी के स्त्री पात्र की है। लेखिका ने 'मी...टू' कहानी के स्त्री पात्र द्वारा भी प्रेम प्रस्ताव को स्वीकार करते दिखाया है, "मुझे लगा हमारे दिल जुड़ने लगे हैं। जितना कुछ कहा गया उससे अधिक अनकहे को सुना और महसूस किया और मैंने बेधड़क ज़ोर से कह डाला, "आई लव यू...." वह दबी सी मुस्काई और चलते–चलते धीरे से उसने मेरी ओर तह किया नैपकिन खिसकाया जिस पर लिखा था "मी....टू...'।"[30] यहाँ एक ग़ौरतलब बात ये है कि लेखिका ने इस तरह के वृद्ध प्रेम को लेकर संशय की स्थिति को स्त्री के मन में ही दिखाया है, वहीं पुरुष पात्र के साथ ऐसे संशय की स्थिति नहीं है। इसके पीछे का कारण संभवतः यह हो सकता है कि भारतीय समाज पितृप्रधान है और शायद स्त्री की तुलना में उसपर पाबंदियाँ कम हैं। व्यावहारिक तौर पर यदि भारतीय समाज में ऐसा हो, तो प्रश्नचिन्ह तो पुरुषों पर भी लग सकते हैं।

वृद्धावस्था में विवाह के भी उदाहरण, विशेषकर पाश्चात्य समाज में देखने को मिलते हैं। अभी हाल ही में ब्रिटेन के एक वृद्ध प्रेमी जोड़े जिसमें पुरुष की उम्र 95 वर्ष और महिला की उम्र 84 वर्ष थी, उन्होंने शादी की (विस्तृत जानकारी के लिए 23 मई, 2022 की indiatimes.com रिपोर्ट देखें)। इस ख़बर को पूरे विश्व के मीडिया ने दिखाया।

डायस्पोरा लेखकों द्वारा लिखी गई कहानियों में वृद्ध के विवाह की चर्चा ज़रूर मिलती है, "पीटर सरू को बहुत पसंद करता है। सरू भी अपनी हर मदद के लिए उसी का मुँह निहारती है। मित्रों ने कई बार सुझाया कि इस प्रगाढ़ सम्बन्ध को शादी में बदल दो मगर सरू को अपने बेटे की आड़ है और पीटर अपनी एकल जीवनशैली का आदी हो चुका है। अब इस उम्र में किसी की दखल नहीं चाहता।"[31] यह सन्दर्भ कादम्बरी मेहरा की कहानी 'वार्ड नंबर चार' का है। यहाँ दोस्तों की सलाह है कि प्रेमी युगल को विवाह कर लेनी चाहिए, लेकिन स्त्री और पुरुष दोनों की अपनी–अपनी समस्याएँ हैं। यहाँ लेखिका ने एक महत्त्वपूर्ण बात रेखांकित की है कि 'सरू को अपने बेटे की आड़ है' सरू एक भारतीय स्त्री है और भारत में वृद्ध विवाह के उदाहरण देखने को नहीं मिलते, इस तरह कहानी में सांस्कृतिक पहलू भी देखा जा सकता है। हालाँकि लेखिका ने पीटर के इस प्रस्ताव पर न करने की वजह भी बताई है।

## वृद्ध आश्रम

भारत में जब वृद्ध बूढ़े हो जाते हैं और उन्हें देखने वाला कोई नहीं रहता, तो ऐसे लोगों के लिए ही वृद्धाश्रम बनाए जाते हैं, जहाँ उनकी देखभाल हो सके। वृद्ध आश्रम को ही अंग्रेज़ी में 'ओल्ड पीपल होम' कहते हैं। ब्रिटेन में ओल्ड पीपल होम का प्रचलन ज़्यादा है। पाश्चात्य संस्कृति में एकल परिवार ज़्यादा हैं, इसलिए वहाँ अक्सर बच्चे अपने माँ–बाप के साथ नहीं रहते। ऐसे में माँ–बाप अकेलेपन के शिकार तो होते ही हैं, लेकिन एक अवस्था के बाद उनकी देखभाल करने वाला जब कोई नहीं रहता तो या तो वे स्वेच्छा से ओल्ड पीपल होम में चले जाते हैं या फ़िर सोशल सिक्योरिटी वाले उन्हें वहाँ भेज देते हैं। 'जनपथ' पत्रिका के संपादक अनन्त कुमार सिंह पाश्चत्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव पर टिप्पणी करते हैं, "यह बात ग़ौर करने लायक है कि विगत तीन दशकों से पश्चिम की नकल पूरी तरह से हावी हो रही है। युवा वर्ग, वहाँ की सभ्यता, संस्कृति, रीति–रिवाज़, जीने–सोचने के ढंग से पूरी तरह प्रभावित है। युवा होते ही अपने माँ–बाप से अलग रहना वहाँ के लिए पुरानी बात है। 'ओल्ड मैन होम' का प्रचलन वहीं से शुरू हुआ है। कोढ़ में खाज यह कि वृद्धों की संख्या बेतहाशा बढ़ रही है और युवाओं के नजरिए में अन्तर उससे ज़्यादा तेजी से बढ़ रहा है। संयुक्त परिवार ढहते–ढहते लगभग खत्म हो गया है और एकल परिवार फल–फूल रहा है। एकल परिवार में भी अब माँ–बाप को अलग करके देखा जा रहा है मतलब पति, पत्नी और छोटे बच्चे। वहाँ न भाई, न चाचा और न माँ–बाप और इससे वृद्धों के आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक कुप्रभाव साफ़ देखा जा सकता है।"[32] पाश्चात्य परिवार के संबंध में तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'खिड़की' का एक उदाहरण द्रष्टव्य है, "जॉन की समस्या है कि उसके तीन तीन बेटे हैं मगर वे काउंसिल के भरोसे हैं, उन्हें ओल्ड पीपल्स होम में रहना पड़ रहा है।"[33] उद्धरण से स्पष्ट है कि जॉन के तीन बेटे हैं, यानी एक भरा पूरा परिवार, लेकिन अब उसके साथ कोई नहीं है। सब अपने–अपने परिवार के साथ हैं। कहानी यह संदेश देती है कि जो माँ–बाप अपने कई बच्चों को पाल–पोसकर बड़ा करते हैं, वहीं बच्चे एक अकेले वृद्ध पिता की देखभाल तक नहीं करते। भारत में वृद्ध आश्रम अक्सर यह सोच कर बनाया जाता है कि जिनका कोई नहीं वे वहाँ रहें और अक्सर ऐसा देखने में भी आता है, लेकिन पाश्चात्य सभ्यता के एकल परिवारवादी धारणा ने यहाँ के लोगों को भी प्रभावित किया है और अब यहाँ के वृद्ध भी पाश्चात्य वृद्धों की श्रेणी में ही आने लगे हैं, अन्यथा भारत में आज भी वृद्धों की देखभाल परिवार में ही होती है। भारत की पारंपरिक वृहत परिवार का यह सबसे सकारात्मक पक्ष है, जिसमें वृद्धों और बच्चों की देखभाल बहुत उत्कृष्ट रूप में होती है। कहानी 'अंतिम चरण' में कादम्बरी मेहरा ने एक वृद्धा की दर्दनाक मौत का चित्रण किया है, "वीरा की गर्दन एक तरफ़ लटकी हुई थी। कपड़े अस्त व्यस्त थे। कोई गरम कपड़ा भी नहीं पहने थी। जुबां एक ओर टेढ़ी लटक रही थी और मुँह से लार टपक रही थी। करुणा उसे लिटाने के लिए आगे बढ़ी तो नयी नर्स ने कहा कि अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो स्ट्रोक के मरीज को हाथ ना लगाती। देखती नहीं उसे स्ट्रोक हुआ है। करुणा ने कहा कि ऐसी हालत में एम्बुलेंस क्यों नहीं बुलाई। नर्स का उत्तर सपाट था– "बुलाई थी मगर एम्बुलेंस को और भी ज़रूरी काम होंगे बजाय कि सत्तानवें वर्ष की बूढ़ी को आराम से लिटाने के।" करुणा ने फोन करना चाहा तो वह सख्ती से बोली कि तुम क्या लगती हो इसकी! ड्यूटी पर मैं हूँ। क़ानूनी फर्ज़ मेरा है। मैंने पूरा कर दिया। अब वे लोग अपना समय लेकर आ जाएँगे। ऐसे मरीज को हिलाने की मुझे या तुम्हें

अनुमति नहीं है सो मेरी मानो तो तुम जाओ। यह न सुन सकती है न समझ सकती हैं।"[34] एक सत्तानवें वर्ष की महिला, जिसके परिवार का भी कोई सदस्य उसे देखने वाला नहीं है। इस स्थिति में वह ओल्डएज होम में है, लेकिन वहाँ के हालात भी ऐसे हैं कि ऐसे लोग परिस्थितिवश असहाय हो जाते हैं।

## निष्कर्ष

उपर्युक्त कहानियों के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि चाहे देश हो या विदेश वृद्धों की स्थिति चिंताजनक है। ब्रिटेन में रह रहे डायस्पोरा लेखकों ने वृद्ध विमर्श से संबंधित कहानियों में भारत और ब्रिटेन दोनों ही स्थानों में रह रहे वृद्धों की समस्याओं को मूलतः अपनी कहानियों में दिखाया है। भारत हो या ब्रिटेन वृद्धों की स्थिति और परिवार का गहरा संबंध है। पाश्चात्य एकल परिवार के बढ़ते चलन के कारण बच्चे अपने माता–पिता से अलग रहना चाहते हैं ऐसे में वृद्धों को अकेले जीवन व्यतीत करने पर विवश होना पड़ता है। इस अकेलेपन और स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं को जब वे नहीं झेल पाते तो उन्हें वृद्ध आश्रम में जाना होता है। वहाँ भी उनके साथ अमानवीय व्यवहार होता है। विश्लेषण में तुलनात्मक दृष्टि से भी देखा गया कि पारंपरिक तौर पर भारत में वृद्धों का सम्मान किया जाता था, लेकिन अब वह परंपरा टूट रही है। अब भारतीय परिवारों में भी वृद्धों की उपेक्षा और प्रताड़ना होने लगी है। हालाँकि वृद्ध जीवन के कुछ सकारात्मक पक्षों को भी लेखकों ने दिखाया है, जिसमें उनके जीवन में वृद्धावस्था में भी प्रेम को स्वीकारना, अपने हुनर द्वारा परिवार में सबको आकर्षित करना और दिल जीतकर मान–सम्मान पाना एवं पालतू जानवरों के द्वारा अपने जीवन के अकेलेपन को दूर करने के उपाय, आदि। निश्चित तौर पर ये कहानियाँ हमें वृद्ध जीवन से साक्षात् करवाती हैं और समस्याओं को दूर कर समाधान तलाशने को प्रेरित करती हैं।

## सन्दर्भ सूची

1. सिंह, अनन्त कुमार (सं.), 'जनपथ' पत्रिका (वृद्ध जीवन विशेषांक, भाग 1), मुद्रक प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली, अगस्त सितम्बर 2015, पृष्ठ 26.
2. वही, पृष्ठ 11.
3. शर्मा, तेजेन्द्र, 'खिड़की' (क.), 'नयी जमीन नया आकाश' (समग्र कहानियाँ 2, सपने मरते नहीं 2015), यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृष्ठ 26.
4. शर्मा, तेजेन्द्र, 'होम लेस' (क.), 'नयी जमीन नया आकाश' (समग्र कहानियाँ 2, दीवार में रास्ता 2012), यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृष्ठ 203.
5. गोयनका, कमल किशोर (संपादन), 'प्रवासी साहित्यः जोहान्सबर्ग से आगे', विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृष्ठ 264.
6. वर्मा, उषा, 'शेष स्मृति' (क.), 'सिम कार्ड', ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ 140.
7. सब्बरवाल, अरुणा, 'परदेश में पतझड़' (क.), 'रॉकिंग चेयर', शिवना प्रकाशन, सीहोर (म.प्र.), प्रथम संस्करण 2022, पृष्ठ 63.
8. वही, पृष्ठ 66.
9. वर्मा, जय (सं.), 'नाना जी' (क.), 'ब्रिटेन की प्रतिनिधि हिंदी कहानियाँ', प्रलेक प्रकाशन, ठाणे, महाराष्ट्र, प्रथम संस्करण 2022, पृष्ठ 168.
10. वही, पृष्ठ 169.
11. वर्मा, जय (सं.), 'अकेलापन' (क.), 'ब्रिटेन की प्रतिनिधि हिंदी कहानियाँ', प्रलेक प्रकाशन, ठाणे, महाराष्ट्र, प्रथम संस्करण 2022, पृष्ठ 159.

12. सिंह, अनन्त कुमार (सं.), 'जनपथ' पत्रिका (वृद्ध जीवन विशेषांक, भाग 2), मुद्रक प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली, अक्टूबर नवम्बर 2015, पृष्ठ 10.
13. मेहरा, कादम्बरी, 'मंथरा हत्या' (क.), 'पथ के फूल', सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009, पृष्ठ 102.
14. वही, पृष्ठ 105.
15. वर्मा, उषा, 'अंबा' (क.), 'सिम कार्ड', ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ 117.
16. वर्मा, जय, 'फिर मिलेंगे' (क.), 'सात कदम', अयन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, आवृति द्वितीय संस्करण 2019, पृष्ठ 81.
17. वही, पृष्ठ 82.
18. वर्मा, उषा, 'इस बार' (क.), 'सिम कार्ड', ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ 125.
19. ज़ुबैरी, ज़किया, 'साँकल' (क.), 'साँकल', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2014, पृष्ठ 109.
20. वही, पृष्ठ 109.
21. पॉल, नीना, 'घर से बेघर' (क.), 'शराफत विरासत में नहीं मिलती, यश पब्लिकेशंस, दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ 34.
22. वही, पृष्ठ 36.
23. सक्सेना, 'वसीयत' (क.), 'साँसों का बोझ' (क.), उषा राजे (सं.), 'मिट्टी की सुगंध' भाग 2', मेधा बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2021, पृष्ठ 255.
24. पॉल, नीना, 'समय का फेर' (क.), 'फासला एक हाथ का', अयन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2009, पृष्ठ 70.
25. सब्बरवाल, अरुणा, 'मी...टू' (क.), 'उडारी', अयन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ 79.
26. सब्बरवाल, अरुणा, 'उडारी' (क.), 'उडारी', अयन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ 18.
27. वही, पृष्ठ 19.
28. वही, पृष्ठ 18.
29. वही, पृष्ठ 21.
30. सब्बरवाल, अरुणा, 'मी...टू' (क.), 'उडारी', अयन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ 81.
31. मेहरा, कादम्बरी, 'वार्ड नंबर चार' (क.), 'डैफ्नी एवं अन्य कहानियाँ', अयन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ 63.
32. सिंह, अनन्त कुमार (सं.), 'जनपथ' पत्रिका (वृद्ध जीवन विशेषांक, भाग 1), मुद्रक प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली, अगस्त सितम्बर 2015, पृष्ठ 6.
33. शर्मा, तेजेन्द्र, 'खिड़की' (क.), 'नयी जमीन नया आकाश' (समग्र कहानियाँ 2, सपने मरते नहीं 2015), यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृष्ठ 27.
34. मेहरा, कादम्बरी,'अंतिम चरण' (क.), 'डैफ्नी एवं अन्य कहानियाँ', अयन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ 59.

********